उपनिषद् दर्शन : एक चिन्तन

भावना शुक्ला

उपनिषदों में ब्रह्म की व्याख्या कहीं कहीं **'नेति नेति'** पद्धति में, कहीं कहीं **'इति इति'** पद्धति में तथा कहीं कहीं **'नेति इति'** पद्धति में की जाती है। उपनिषदों में निर्गुण ब्रह्म का निर्वचन में की जाती है। उपनिषदों में निर्गुण ब्रह्म का निर्वचन में निषेधात्मक पदों का प्रयोग किया गया है। बृहदारण्यकोपनिषद् में **'नेति नेति'** के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए याज्ञवल्क्य कहते हैं कि 'ब्रह्म न यह है, न वह है (नेति नेति) बृहदरारण्यकोपनिषद् में ब्रह्म को अस्थूल, अणु, हस्व, अदीर्घ, अलोहित, अच्छाय, अतम, असप्र, अरस, अगन्ध, अचक्षुष्क, अश्रोत्र, अवाक्, अमन, अप्राण, अमुख, अनन्तर, अबाह्य, अयुक्त तथा अभोग्य प्रतिपादित किया गया है। कठोपनिषद् में भी ब्रह्म की निषेधात्मकता को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि ब्रह्म अशब्द, अरूप, अस्पर्श, अरस, अगन्ध, अनादि और अनन्त है। तैत्तिरीययोपनिषद् में **'यतो वाचो निर्वतन्ते अप्राप्य मनसा सह'** कहकर ब्रह्म को वाणी एवं मन दोनों के परे बताया गया है। इस प्रकार 'नेति नेति' सिद्धान्त के द्वारा ब्रह्म की अनिर्वचनीयता का प्रतिपादन किया गया है। वस्तुतः 'नेति नेति' का सिद्धान्त मात्र ब्रह्म के गुणों का निषेध करता है, ब्रह्म का नहीं।